अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में डॉ. गांधी की अब तक की उपलब्धियाँ

- संयुक्त राष्ट्र के लोक सूचना विभाग की सहयोगी इकाई के रूप में 'अणुविभा' को मान्यता – 1998 ।

- विश्व के 192 देशों में फैले हुए शांति और अहिंसा के क्षेत्र में कार्यरत संयुक्त राष्ट्र से मान्यता प्राप्त 1700 से भी अधिक गैर–सरकारी संगठनों से सम्पर्क एवं सहयोग ।

- 12 देशों की 25 संस्थाओं से सन् 1987 में प्रारम्भ कर अहिंसा एवं शांतिपरक संगठनों/संस्थाओं से हमारा सम्पर्क अब 150 देशों में स्थित दस हजार से भी अधिक संगठनों तक पहुँच गया है।

- डॉ. एस.एल. गांधी द्वारा अब तक 23 देशों में आयोजित 47 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में पत्र–वाचन । सम्मेलनों में निर्धारित विभिन्न विषयों के परिप्रेक्ष्य में अणुव्रत, जीवन विज्ञान, अहिंसा, जैन दर्शन आदि के विभिन्न पहलुओं पर उन्होंने शैक्षणिक पत्र तैयार किए ; जिन्हें आयोजकों ने गुणवत्ता के आधार पर स्वीकृत कर इन सम्मेलनों में भाग लेने के लिए उनका व्यय वहन किया तथा परितोषण प्रदान किए ।

- इन विभिन्न सम्मेलनों में उपस्थित हजारों विद्वानों से सहज सम्पर्क एवं अणुव्रत दर्शन पर विचारों का प्रभावी आदान–प्रदान हुआ।

- अब तक शांति एवं अहिंसक उपक्रम पर ग्यारह अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन । उनमें 40 देशों के 600 से अधिक विदेशी प्रतिनिधियों का स्वयं के खर्चे पर आगमन एवं हमारे अहिंसा एवं अणुव्रत उपक्रमों का समर्थन ।

- इन्टरनेशनल पीस ब्यूरो – जेनेवा, पार्लियामेन्ट ऑफ वर्ल्डस रिलिजन्स – न्यूयार्क, यूनाइटेड रिलिजन्स इनिसिएटिव – सेनफ्रान्सिसको, इन्टरनेशनल पीस रिसर्च ब्यूरो – जेनेवा, इन्टरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पीस स्टडीज एण्ड ग्लोबल फिलोसोफी – यूके जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं से अणुविभा का घनिष्ठ सम्बन्ध एवं परस्पर सहयोग ।

- संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित एवं उसके द्वारा मान्यता प्राप्त गैर–सरकारी संगठनों के वार्षिक सम्मेलन में अणुविभा प्रतिनिधियों की सहभागिता, पत्र वाचन एवं कुछ कार्यशालाओं की अध्यक्षता । इन सम्मेलनों में डॉ. गाँधी के अतिरिक्त श्री तेजकरण सुराणा, श्री संचय जैन, श्री बुद्धसिंह सेठिया एवं श्री महेन्द्र जैन की अलग–अलग देशों में सहभागिता एवं पत्र–वाचन।

- तीन अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन, जिनमें अब तक 12 देशों के 70 विदेशी एवं सौ से अधिक भारतीय प्रतिनिधियों की सहभागिता।

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अर्जित विशिष्ट उपलब्धियाँ

सोवियत रूस में अणुव्रत

• प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के चार महीने बाद डॉ. गांधी की सोवियत रूस की महत्त्वपूर्ण यात्रा। तत्कालीन सोवियत संघ के राष्ट्रपति गोर्बोचोव के नाम गुरुदेव तुलसी का महत्त्वपूर्ण संदेश, जिसे डॉ. गांधी ने गोर्बोचोव के प्रतिनिधि तक पहुंचाया । सोवियत विमेन्स कमिटी के ताशकन्द सत्र में अणुविभा प्रतिनिधि की प्रस्तुति । ताशकन्द रेडियो से डॉ. गांधी का साक्षात्कार प्रसारित ।

अहिंसा–षिक्षण पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय संवाद

• पूज्यवरों की सन्निधि में लाडनूं में 1992 में अहिंसा–प्रशिक्षण पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय संवाद का आयोजन, जिसमें गुरुदेव तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ के अतिरिक्त तिब्बत के बौद्ध धर्मगुरु परम पावन दलाई लामा, हवाई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त अहिंसा चिंतक डॉ. ग्लेन डी पेज, अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त शांति शोधकर्ता प्रोफेसर जोहान गेल्टूंग, मार्टिन लूथर किंग जूनियर के सहयोगी रहे प्रो. बर्नार्ड लफायटे तथा चार्ल्स एलफिन, संयुक्त राष्ट्र शांति अध्ययन इकाई प्रमुख सुश्री लुडविग, जैन यूनिवर्सिटी – लाडनूं के कुलपति प्रोफेसर रामजी सिंह, गुजरात विद्यापीठ के कुलपति प्रोफेसर रामलाल पारीख, राजस्थान पत्रिका के प्रबन्ध निदेशक डॉ. गुलाब कोठारी आदि प्रसिद्ध चिंतकों की सहभागिता रही ।

शिकागो विष्व धर्म सम्मेलन में अणुविभा सह–प्रायोजक

• 1893 में शिकागो में आयोजित प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द के भाग लेने के सौ वर्ष बाद, उस महत्वपूर्ण सम्मेलन की पावन स्मृति में सन् 1993 में शिकागो में पुनः उसी होटल में विश्व धर्म सम्मेलन का आयोजन । अणुविभा का सह–प्रायोजक के रूप में सर्वसम्मति से मनोनयन एक सुखद आश्चर्य तथा अणुविभा की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का प्रमाण है। डॉ. गांधी द्वारा इस सम्मेलन में 'अणुव्रत – ए पाथवे टू पीस' पर महत्वपूर्ण प्रस्तुति । तीन सौ से अधिक प्रतिनिधियों की उस व्याख्यान में सहभागिता ।

जर्मन पत्रिका का एक अंक अणुव्रत को समर्पित

• जर्मनी डसलडल्फ शहर से 'द पेजिफिस्ट' नामक पत्रिका प्रकाशित होती है । हमने उन्हें सन् 1991 में राजसमंद में आयोजित द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन द्वारा स्वीकृत 'डेक्लेरेशन ऑन ट्रेनिंग इन नॉनवायलेंस' भेजा । उन्होंने पेजिफिस्ट का एक पूरा अंक उस घोषणा–पत्र को समर्पित कर दिया । वह सम्पूर्ण घोषणा–पत्र तथा अन्य निर्णय जो उसमें प्रकाशित थे, उनका जर्मन भाषा में अनुवाद कर पत्रिका ने 1994 में एक विशेषांक निकाला ।

कोपनहेगन में संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित सामाजिक षिखर सम्मेलन में डॉ. गांधी की सहभागिता

• संयुक्त राष्ट्र द्वारा सन् 1995 में कोपनहेगन में आयोजित सामाजिक शिखर सम्मेलन में भाग लेने हेतु अणुविभा को पहली बार अस्थाई मान्यता तथा अणुविभा के प्रतिनिधि को सम्मेलन में भाग

लेने के लिए आमंत्रण एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उपलब्धि । 'सामाजिक एकीकरण में अणुव्रत की महत्ता' पर पत्र वाचन । संयुक्त राष्ट्र संघ ने पहली बार सरकारी प्रतिनिधियों के अलावा विश्व की कुछ चुनी हुई गैर–सरकारी संस्थाओं को शिखर सम्मेलन में आमंत्रित किया गया, उनमें अणुविभा एक थी ।

हारवार्ड विष्वविद्यालय में डॉ. गांधी की प्रस्तुति

- हारवार्ड विश्वविद्यालय द्वारा जुलाई 1998 में जैन दर्शन एवं पारिस्थितिकी पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में अणुविभा प्रतिनिधि डॉ. गाँधी द्वारा लिखा गया शैक्षिक पत्र–वाचन के लिए स्वीकृत तथा उनकी उस सम्मेलन में सहभागिता ।

संयुक्त राष्ट्र के गलियारों में अहिंया यात्रा की गूंज

- संयुक्त राष्ट्र द्वारा सन् 2007 में तीन अक्टूबर से 5 अक्टूबर तक 'अंतः धार्मिक एवं सांस्कृतिक साम्प्रदायिक समझ एवं सहयोग' विषय पर एक उच्च विश्व स्तरीय संवाद का आयोजन । इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र महासभा भवन में 192 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों एवं नागरिक समाज की अन्योन्य क्रियापरक (इन्टरएक्टिव) जनसुनवाई में डॉ. सोहनलाल गाँधी का एक पेनल–वक्ता के रूप में चयन । ज्ञात हो कि संयुक्त राष्ट्र ने इस पेनल में वक्ताओं के चयन के लिए एक टॉस्क फोर्स गठित किया था। 192 देशों से प्राप्त हजारों प्रस्तावों में से डॉ. गाँधी के प्रस्ताव का गुणवत्ता के आधार पर टॉस्क फोर्स द्वारा चयन हुआ था। डॉ. गाँधी ने 'अनेकान्त और अहिंसा द्वारा अंतः धार्मिक एवं सांस्कृतिक साम्प्रदायिक समझ एवं सहयोग' पर 100 शब्दों में प्रस्ताव भेजा था जो चयन का आधार बना। संयुक्त राष्ट्र के गलियारों में अहिंसा–यात्रा एवं अनेकान्त की वैश्विक गूंज ।